17 नवम्बर 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 16
नवम्बर (द्वितीय), 2022 (वीर नि. संवत्-2549)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के...
वैराग्य महाकाव्य पर विशेष प्रवचन

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के लोकप्रिय महाकाव्य **वैराग्य** पर 02 नवम्बर 2022 से विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। डॉ. भारिल्ल ने एक-एक पंक्ति के अर्थ को गहराई के स्पष्ट किया। कुछ-कुछ शब्दों व पंक्तियों में इतना रहस्य भरा हुआ है, जिन पर घण्टों प्रवचन किए जा सकते हैं।

उन्होंने काव्य के कलापक्ष के सम्बन्ध में तो अनेक बातें बतलाई साथ ही भावपक्ष को भी स्पष्ट किया। राजुल के स्वप्न में नेमिकुमार को बुलाकर तथा राजुल व उनके पिता के माध्यम से जो चर्चाऐं प्रस्तुत की हैं वें अत्यधिक तात्त्विक होने के साथ-साथ एक आदर्श जीवन की प्रेरणा भी देती हैं। वास्तव में तो डॉ. भारिल्ल ने इन संवादों के माध्यम से अपना विशेष चिंतन प्रस्तुत किया है; जो अन्यत्र दुर्लभ है।

काव्य में राजुल की संलाप-विलाप-प्रलाप इसप्रकार तीनों स्थिति के साथ-साथ तत्त्वज्ञान की समझ को भी दर्शाया है। राजुल की दीक्षा की घटना के आधार से उन्होंने दीक्षा के पूर्व भावभूमि कैसी होनी चाहिए? वास्तविक तैयारी कहाँ होनी चाहिए? इत्यादि बातों को स्पष्ट किया।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

कारंजा (महा.) : यहाँ 31 अक्टूबर से 07 नवम्बर 2022 तक श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन सेनगण मंदिर में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का मंगलमय आयोजन किया गया।

इस अवसर पर युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के समयसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से प्रवचनों का लाभ मिला। विधान पण्डित अजितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर ने सम्पन्न कराया। ध्वजारोहण श्री अरुणभाई गहाणकारी मुम्बई व मण्डप उद्घाटन श्री प्रशांतजी संगई नाशिक ने किया।

06 नवम्बर को सेनगण मन्दिर के पदाधिकारियों की ओर से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का 1908 में कारंजा से सर्वप्रथम मुद्रित आत्मख्याति वचनिका व प्रशस्ति भेंटकर सम्मान किया गया।

इस आयोजन की सफलता में श्री शिरीषजी चवरे, श्री भरतजी भोरे, श्री विनम्रजी चवरे, श्री अलोकजी चवरे, श्री विवेकजी गहाणकरी, श्रीमती विजयाताई भिसीकर, श्रीमती प्रज्ञाताई डोनगावकर, पण्डित अलोकजी शास्त्री, पण्डित चिंतामनजी शास्त्री, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित संयमजी शास्त्री का सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि 07 नवम्बर को रात्रि में डॉ. गोधा के **एम्प्रेस सिटी नागपुर** में रत्नकरण्ड श्रावकाचार विषय पर प्रवचन हुए।

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 06 नवम्बर 2022 को **जैन इतिहास में आचार्य परम्परा** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय वर्ग से संभव जैन ललितपुर तथा शास्त्री वर्ग से सक्षम जैन ललितपुर व हर्षित जैन दमोह चुने गए। सत्र का संचालन अरविन्द जैन खड़ैरी तथा नमन जैन हटा एवं मंगलाचरण आकिंचन्य पुजारी खनियांधाना ने किया। अन्त में आभार-प्रदर्शन उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

47 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

आठवें अध्याय का सार (उपदेश का स्वरूप)

अनुयोगों का प्रयोजन...

अब यहाँ मिथ्यादृष्टि जीवों को मोक्षमार्ग में लगाने के लिए उपदेश देते हैं। यहाँ साक्षात् तीर्थंकर परमात्मा, आचार्यदेव ने जो उपदेश दिया, उसका ही अनुसरण करके उपदेश देते हैं।

जिनमत में उपदेश अनुयोगों के माध्यम से दिया जाता है - प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोग।

प्रथमानुयोग में कथा-कहानियों, चरणानुयोग में गृहस्थ-मुनिधर्म के आचरण, करणानुयोग में कर्म, तीन लोक एवं द्रव्यानुयोग में छह द्रव्य, सात तत्त्व की विशेष चर्चा होती है। चारों ही अनुयोगों का एकमात्र प्रयोजन वीतरागता की वृद्धि करना ही है, सो इसप्रकार है -

प्रथमानुयोग का प्रयोजन...

प्रथमानुयोग में संसार की विचित्रता, पुण्य-पाप के फल, महन्त पुरुषों की प्रवृत्ति - इत्यादि चर्चा करके जीवों को धर्म में लगाते हैं अर्थात् तुच्छ बुद्धि जीवों को कथा-कहानियों के माध्यम से धर्म में लगाते हैं। लोक में जिन कहानियों से पाप का पोषण होता है, उन्हीं के माध्यम से यहाँ पाप छुड़ाकर धर्म में लगाया जाता हैं।

प्रथम अर्थात् अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टि इसके लिए जो अनुयोग हो वह प्रथमानुयोग है। ऐसा जानकर कोई कहे कि जो तत्त्वज्ञानी जीव हैं, उन्हें प्रथमानुयोग प्रयोजनभूत नहीं रहा? उनसे पण्डितजी कहते हैं कि इसमें मात्र कोरी कहानियाँ ही नहीं बतलाते, कहानियों में दस-दस भवों की चर्चा होती है। कमठ-मरुभूति, राजुल-नेमी इत्यादि कथाओं में पूर्व के भवों का कथन करते हैं, जिससे जीव की अनादि-अनन्तता का ही भावभासन होता है।

तथा जिन तथ्यों को इस जीव ने मूलशास्त्रों में पढ़ा था, वे प्रथमानुयोग की कहानियों में उदाहरण स्वरूप भासित होते हैं अर्थात् वैसी की वैसी अवस्थाएँ यहाँ होती देखी जाती हैं। यह प्रथमानुयोग उन सिद्धान्तों के लिए दृष्टान्त स्वरूप भासित होता है। यहाँ धर्मात्माओं की प्रशंसा और पापियों की निंदा करते हैं, जिससे धर्म के प्रति उत्साह बढ़ता है। इसप्रकार प्रथमानुयोग का प्रयोजन जानना।

करणानुयोग का प्रयोजन...

करणानुयोग में कर्म सिद्धान्त व भूगोल/तीन लोक - इन बातों की मुख्यरूप से चर्चा होती है, इसके माध्यम से भी धर्म मार्ग में ही लगाते हैं। कहीं कर्मों की अवस्थाएँ उदय-उदीरणा, तीन लोक में स्वर्ग-नरकादि का निरूपण कर जीवों के उपयोग को रमाते हैं और जब उपयोग रमता है तो पाप की प्रवृत्ति छूटती है और अभ्यास से शीघ्र ही तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

जो तत्त्वज्ञानी जीव है, उन्होंने जो अभ्यास किया था। यहाँ उन्हीं का विशेष निरूपण होने से तत्त्वज्ञान निर्मल होता है। जैसे कोई यह तो जानता था कि यह रत्न है; परन्तु रत्न की विशेषताएँ जानने से निर्मल रत्न का पारखी होता है। उसीप्रकार तत्त्वों को जानता था; परन्तु उन तत्त्वों के विशेष जानने से तत्त्वज्ञान निर्मल होता है। छद्मस्थ जीवों की समस्या यह है कि उनका उपयोग निरन्तर एकाग्र नहीं रहता। यदि अन्य जगह उपयोग लगाया हो तो राग-द्वेष की वृद्धि होती है, इसलिए ज्ञानी जीव करणानुयोग के अभ्यास में उपयोग को लगाते हैं। उपयोग की एकाग्रता के अभ्यास के लिए भी करणानुयोग बहुत प्रयोजनभूत है। इसप्रकार करणानुयोग का प्रयोजन जानना।

चरणानुयोग का प्रयोजन...

चरणानुयोग में अनेक प्रकार से धर्म के साधन का निरूपण कर धर्म में लगाते हैं। पूजन-विधान-व्रतादि के माध्यम से धर्म प्रवृत्ति कराते हैं। जैसे आजकल जिन्हें स्वाध्याय की रुचि नहीं है, उन्हें पूजन-विधान के माध्यम से धर्म की बातें सुनाते हैं। जिन जीवों को घूमने-फिरने का शौक होता है, उन्हें तीर्थ यात्राओं पर ले जाकर धर्म सुनाते हैं - ऐसे निरूपण से जीव पाप छोड़कर धर्म आचरण करता है तथा गृहस्थ व मुनिधर्म का उपदेश सुनकर जैसा सधे वैसे धर्म साधन में लगता है। इन सबसे कषाय मंद होती हैं, सुगति की प्राप्ति होती है और तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के निमित्त मिलते हैं।

तथा जो जीव तत्त्वज्ञानी है, उन्हें ये आचरण वीतरागता रूप व वीतरागता की वृद्धि करने वाले भासित होते हैं। श्रावक व मुनि अपने वीतराग भाव के अनुसार ही धर्म का साधन करते हैं। इसप्रकार चरणानुयोग का प्रयोजन जानना।

द्रव्यानुयोग का प्रयोजन...

द्रव्यानुयोग में छह द्रव्यों व सात तत्त्वों की चर्चाएँ हैं, यहाँ हेतु-युक्ति व प्रमाण-नय आदि से उनका स्वरूप बताते हैं यह जीव भेदविज्ञान कर सके, मोक्षमार्ग में अग्रसर हो सके, आत्मा परमात्मा का भान कर सके - ऐसे कथन मुख्य रूप से द्रव्यानुयोग में होते हैं।

तथा जिन जीवों को तत्त्वज्ञान हुआ हो उन्हें यह सभी कथन अपने श्रद्धान के अनुसार प्रतिभासित होते हैं। इसप्रकार द्रव्यानुयोग का प्रयोजन जानना।

इसप्रकार सामान्य बुद्धि वाले जीवों एवं तत्त्वाभ्यासी जीवों के लिए चारों ही अनुयोग प्रयोजनभूत हैं, इसका निरूपण किया।

महाविद्यालय स्थल

महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य एवं जैन पथप्रदर्शक के पूर्व सम्पादक अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के स्मृति दिवस एवं जन्म दिवस (सहजता दिवस) के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त उनकी भावनाएँ –

मैंने उन्हें सिर्फ मौन देखा है – समकित जैन, ईसागढ़

कलम थी हल्की, मगर लेखनी बहुत भारी थी।
गम्भीर से थे, मगर मुस्कान बहुत प्यारी थी।
ऐसा अवरोध-विरोध आखिर कौन देखा है?
मैंने उन्हें सिर्फ मौन देखा है...

वरिष्ठ होकर भी वो कनिष्ठ थे;
क्योंकि उनके नम्रता के मिजाज़ घनिष्ठ थे।
कनिष्ठ होकर भी वो वरिष्ठ थे;
क्योंकि अपने सिद्धान्तों में वे एकनिष्ठ थे।
कनिष्ठ-वरिष्ठ का ऐसा संगम आखिर कौन देखा है?
मैंने उन्हें सिर्फ मौन देखा है...

वक्रता की ठण्ड में, सरलता की धूप थे।
शान्ति के प्यासे को सहजता के कूप थे।
प्रकृति के बहुमूल्य रतन, चन्द हुआ करते हैं।
और सहजता के कन्द ही रतनचन्द हुआ करते हैं।
ऐसे बेशकीमती रतन आखिर कौन देखा है?
मैंने उन्हें सिर्फ मौन देखा है...

लेखन चिंतन काव्य धरा में जन-जन की आवाज़ बन गए।
जिनवाणी के ये सपूत जिनशासन के सिरताज बन गए।
झोंका पूरे जीवन को वे हम सबके कुछ खास बन गए।
सरल धरा के सहज पुरुष **जिनशासन के इतिहास** बन गए।

मानव तिलक – अभिषेक जैन, देवराहा

वे महापुरुष मानव-तिलक जिनवाणी भक्त उपासक थे।
वे सहज पुरुष वो रतन नहीं, रत्नाकर पूर्ण दिवाकर थे।।
जिनकी मुस्कान उदित होते सूरज की याद दिलाती थी।
वो धवल वस्त्र में गुजर गए तो पवन भी हंस खिल जाती थी।।
वो ऊर्धता को पा गए, गिरी से बड़े पर्वत अचल।
जाते हुए बतला गए, रस्ता यही सबसे सरल।।
जो सहज थे, उदार थे, सबके प्रिय दृग हार थे।
उन-सा कहाँ मोती मिले, वे रतन थे हिय हार थे।।

अद्वितीय रत्न : रतनचन्द भारिल्ल – अमन जैन, खनियांधाना

पण्डित रतनचन्द जैसा तुम, रत्न ढूंढने जाओगे
इस धरा की वसुंधरा पर, ढूंढ नहीं तुम पाओगे।
भरतक्षेत्र में विदेहक्षेत्र सम, ज्ञान जिन्होंने झेला है
ऐसे हजारों रत्नचन्द का, टोडरमल में मेला है।।2।।

जम्बू से जम्बूस्वामी, बनने की कथा निराली है
षट्कारक अनुशीलन पढ़कर, **द्रव्यदृष्टि** अपनानी है।
संस्कार का बीज पनपता, अन्तर मन की खाई में
रतनचन्द की सरिता बहती, **चिन्तन की गहराई** में।।3।।

पीढ़ी तुमको याद रखेगी, कल स्वर्णिम इतिहास में
युगों-युगों तक महकोगे तुम, जिनवाणी की श्वासों में।
सहज पुरुष के इस आँगन का, स्वर्णिम काल तुम्हारा है
ऐसे पण्डित रतनचन्द को, शत-शत नमन हमारा है।।4।।

सहज पुरुष – अरविन्द जैन, खड़ैरी

सहज पुरुष की सहज कथा है, न कोई दुखिये की ये व्यथा है।
दुःखद रुदन को जाना होगा, हँसता चेहरा लाना होगा।।
सहजानन्द प्रकट करने का, श्रेष्ठ दिवस यह आया है।
लाखों में अनमोल रतन का, जन्मदिवस यह लाया है।।
पिंजड़े से आज़ाद करो गर, कोई परिंदा रो सकता है?
ज्ञानी जन की मृत्यु में, शोक भला क्या हो सकता है?
अचल खड़े मेरु को कभी, कोई लिटा भी सकता है?
ठीक इसतरह धीर पुरुष को, कोई मिटा भी सकता है?
सुखा दिये छोटे पोखर, पर बहती नदियाँ रोक सकोगे?
भले देह तो सूख गई, पर वाणी को तुम रोक सकोगे?
भले खड़ी हो घोर अमावस, चंदा से क्या नूर है जाता?
अरे लाख में तारा था जो, ऐसा पुरुष भी दूर है जाता?
न बुझ पाया वह रतनदीप, अर नाहीं वह बुझ पायेगा।
उनके लेखित पृष्ठों की भाँति, वह भी अमर कहायेगा।
सारा जीवन ही सहज रहा, न कभी किया कोई भी जतन।
हुआ कभी न होगा ही, इन सम कोई अनमोल रतन।
बड़े-बड़े विद्वत गुरुओं अर, हुकम की यही जुबानी है।
ऐसा न हुआ पुरुष कोई, इसकी अनुपम ही कहानी है।

आगामी कार्यक्रम – पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का के जन्मदिवस को सहजता दिवस के रूप में प्रतिवर्ष जाता है। इस वर्ष 21 नवम्बर को यह समारोह टोडरमल स्मारक में मनाया जाएगा।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ 8 से 10 नवम्बर 2022 तक श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सेक्टर–4 में तीन दिवसीय आदर्श जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के पंचकल्याणक विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। यह आयोजन प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा, डॉ. अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल के सहयोग से हुआ।

08 नवम्बर को सर्वप्रथम जिनेन्द्र रथ यात्रा मंदिरजी से प्रतिष्ठा मण्डप तक पहुँची। ध्वजारोहण श्री राजमलजी–अंकुरजी टीमरवा परिवार ने किया। तत्पश्चात् सिंहद्वार उद्घाटन, प्रतिष्ठा मण्डप उद्घाटन, मंच प्रतिष्ठा, याग मण्डल विधान, श्रीजी स्थापना, नांदी विधान, गर्भ कल्याणक इन्द्र सभा, राजसभा, सोलह स्वप्न प्रदर्शन जैसे मांगलिक आयोजन सम्पन्न हुए।

09 नवम्बर को प्रात: इन्द्र–इन्द्राणियों द्वारा गर्भ कल्याणक एवं जन्म कल्याणक की पूजन सम्पन्न हुई। दोपहर को इन्द्र सभा एवं राजसभा आयोजित हुई, जिसमें तप कल्याणक महोत्सव मनाया गया एवं दीक्षा कल्याणक की पूजन हुई। रात्रि में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित लोकप्रिय नाटक **'भरत के अंतर्द्वन्द्व'** का मंचन किया गया।

10 नवम्बर को केवलज्ञान कल्याणक एवं निर्वाण कल्याणक की पूजन सम्पन्न हुई। जिनेन्द्र रथयात्रा पूर्वक समवशरण और मूलवेदी पर जिनेन्द्र भगवान, छत्र, भामण्डल व चमर की स्थापना की गई।

महोत्सव के सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री शान्तिलाल–पुष्पाजी अखावत एवं तीर्थंकर के माता–पिता श्री लालचन्द–रतनदेवी नवाडिया थे। इस प्रतिष्ठा महोत्सव में 1 इंच की स्फटिक मणि की प्रतिमा के अतिरिक्त आदिनाथ भगवान एवं महावीर भगवान की 18 इंच की जिन प्रतिमा, समवशरण में युगमन्धर स्वामी की 21 इंच की चारों दिशाओं में प्रतिमा विराजमान की गईं।

सम्पूर्ण आयोजन डॉ. महावीरप्रसादजी जैन एवं डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में स्थानीय विद्वान पण्डित खेमचन्द जैन, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित नीलेशजी शास्त्री, हेमन्तजी शास्त्री, अनुभवजी शास्त्री, ज्ञायकजी शास्त्री, हितंकरजी शास्त्री, संवेगजी शास्त्री, डॉ. ममताजी जैन एवं शाश्वत बालाओं के सहयोग से हुआ।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का तूफानी दौरा

मंगलायतन में दीपावली पर्व के अवसर पर 21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक, **महावीर जिनालय नागपुर** में 28 अक्टूबर सायं से 30 अक्टूबर सुबह तक, **कारंजा** में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर 30 अक्टूबर सायं से 07 नवम्बर सुबह तक, **एम्प्रेस सिटी नागपुर** में 07 नवम्बर को सायंकाल, **उदयपुर** पंचकल्याणक में 08 नवम्बर से 10 नवम्बर सुबह तक, **नवरंगपुरा (अहमदाबाद)** में 10 नवम्बर सायं व 11 नवम्बर सुबह, **राजकोट** में 11 नवम्बर सायं से 13 नवम्बर सुबह तक, **गिरनारजी** में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 13 नवम्बर सायं से 19 नवम्बर तक।

उक्त सभी स्थानों पर प्रात: समयसार एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। उदयपुर पंचकल्याणक में दोनों ही समय पंचकल्याणक विषय पर विशेष प्रवचन हुए।

प्रथम जैन बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

सांगली : यहाँ श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय एवं संस्कृत सम्वर्धन केन्द्र के तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 9 नवम्बर 2022 तक सांगली में प्रथम बार जैन बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में सांगली, कुपवाड़, जयसिंगपुर, कोथली, आरग, मिरज, कोल्हापुर, पूणे, अकलूज आदि स्थानों से लगभग 300 बच्चों ने भाग लिया। शिविर में प्रतिदिन प्रात: योगासन, सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, बालबोध कक्षायें, अनेक सामूहिक कक्षायें, जिनेन्द्र भक्ति एवं अनेक ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। अन्त में प्रमाण पत्र व पुरस्कारों का वितरण भी किया गया।

शिविर में ध्वजारोहण पण्डित महावीरजी पाटील एवं उद्घाटन श्री विजयकुमारजी जैन मुम्बई ने किया। अतिथियों में श्री उल्लासभाई जोबालिया, श्री नीलेशभाई जैन, श्री राकेशजी जैन, श्री सुमेरचन्दजी बेलोकर सहित सांगली के सभी स्थानीय विद्वान उपस्थित थे।

शिविर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ के निर्देशन में पण्डित अमोलजी सिंघई, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी महाजन, पण्डित सुशांतजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री एवं पण्डित श्रीवर्धनजी पाटील के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

नि:शुल्क **विशेष सूचना** **नि:शुल्क**

डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया द्वारा लिखित परमागम प्रवेशिका जैन दर्शन के सिद्धान्तों को समझने के लिए अत्यन्त सरल कृति है। एतदर्थ श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा इसका नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें – 7412078703

महामना पण्डित टोडरमलजी की स्मृति सभा

कोटा (राज.) : यहाँ श्री धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय एवं आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन कोटा के संयुक्त आयोजकत्व में पण्डित टोडरमलजी के स्मृति दिवस के अवसर पर दिनांक 30 अक्टूबर 2022 को स्मृति सभा आयोजित की गई।

इस अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, पण्डित नितेशजी शास्त्री, पण्डित अनुजजी शास्त्री आदि महाविद्यालय के अध्यापक मंचासीन थे। 6 वक्तव्य एवं 2 कविताओं के माध्यम से पण्डितजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने पण्डितजी को श्रद्धांजलि समर्पित की।

विज्ञान वाटिका पुरस्कार वितरण समारोह

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ दिनांक 23 अक्टूबर 2022 को लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका पर आधारित विज्ञान वाटिका के षष्टम् पुष्प और समयसार कहान शताब्दी वर्ष के अवसर पर ग्रन्थाधिराज समयसार पर आधारित सप्तम पुष्प का संयुक्त पुरस्कार वितरण समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता श्री सुनीलजी गांधी पुणे ने की। स्वागताध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, मुख्य अतिथि डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई, विशिष्ट अतिथि डॉ. किरणभाई शाह पुणे, श्री केशवदेवजी कानपुर, श्री जैनबहादुरजी जैन कानपुर, श्री मनोजजी जैन सागर, श्री राजीवजी वसुंधरा, श्री अनिलजी दिल्ली थे। अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, पण्डित जे. पी. दोशी मुम्बई, पण्डित अरिहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, श्री स्वप्निलजी मंगलायतन, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री आदि उपस्थित थे। पुरस्कार वितरणकर्ता श्री प्रेमचन्दजी, तन्मय-ध्याताजी बजाज परिवार कोटा, श्री सुनीलजी सराफ सागर एवं श्री गर्जतो ज्ञायक आध्यात्मिक ट्रस्ट मुम्बई रहे।

सभा का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा और पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर ने किया। पण्डित हितेशभाई चौबटिया ने अथक् परिश्रम के लिए ऋषभजी शास्त्री को सम्मानित किया। विशेष सहयोग हेतु श्रीमती नूतनजी जैन व श्रीमती ममताजी जैन दिल्ली को भी सम्मानित किया। उपस्थित सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। अन्त में आभार-प्रदर्शन पण्डित नगेशजी पिड़ावा ने किया। **– पण्डित सुधीरजी शास्त्री**

अष्टाह्निका सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कार्तिक माह के अष्टाह्निका महापर्व पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। समारोह के आमंत्रणकर्ता श्रीमती मंजुलाबेन नगिनदास महेता सुपुत्री प्रीतिबेन भावेशभाई देसाई परिवार मुम्बई रहे।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के सिद्धचक्र विधान की जयमाला, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा के समयसार व मोक्षमार्ग प्रकाशक, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल के ज्ञान गोष्ठी एवं पण्डित शीतलभाई लन्दन के गुणस्थान विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य श्री सुनीलजी धवल, श्री अनिलजी धवल, श्री दीपकजी धवल भोपाल ने कराए। आभार-प्रदर्शन श्री विपुलभाई मोटानी ने किया। **– उर्विश शास्त्री देवलाली**

हार्दिक शुभकामनाएँ

जोधपुर : अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर द्वारा डॉ. विकासजी शास्त्री बानपुर को **तत्त्वार्थ सूत्र के आलोक में युगीन समस्याओं के समाधान** विषय पर उत्कृष्ट शोधकार्य (Ph.D) करने के लिए 'डॉ. विमला भण्डारी जैनरत्न शोध सम्मान 2022' से सम्मानित किया गया।

डॉ. विकासजी शास्त्री ने यह शोधकार्य जैन विश्वभारती लाडनू यूनिवर्सिटी से प्रो. शशिप्रज्ञाजी के निर्देशन में किया।

ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 23वें बैच के स्नातक विद्वान हैं। वर्तमान में सामाजिक सक्रियता एवं ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए जीवन शिल्प इण्टर कॉलेज संचालित कर रहे हैं। आप इससे पूर्व 2021 में पण्डित रत्नचन्द भारिल्ल पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

गतांक से आगे...

द्वितीय अध्याय

(वीर)

सबसे पहले भरतराज ने आदीश्वर को याद किया।
छोटे भाई वृषभसेन को फिर आदर से नमन किया।।
ऋषभदेव से दीक्षा ले वे पहले गणधरदेव बने।
शत–शत वन्दन महाभाग्यशाली मुनिवर के चरणों में।।

और अनेकों भाई जो–जो दीक्षित हो मुनिराज बने।
आत्मसाधना में तत्पर होकर जो गणधरदेव बने।।
उन सबको वन्दन करके अभिनन्दन करते हैं हम सब।
उनके अनुपम इस कारज को सबका सौभाग्य समझते हम।।

जिन्हें अंक[1] में लेकर जिन[2] ने अंक और अक्षर विद्या।
सिखलाई हों उनकी महिमा अरे कहाँ तक गायें हम।।
उन्हीं ब्राह्मी–सुन्दरि ने आर्या की दीक्षा को लेकर।
सौभाग्य बढ़ाया हम सबका हो महामान्य गणनी बनकर।।

नाभिराय के कुल को ही रे एक और सौभाग्य मिला।
चक्ररत्न ने आकर अपनी सेवाओं का दान दिया।।
छह खण्डों में बँटे भरत[3] को वह ही अखण्ड रूप देगा।
हम सब भी होंगे अखण्ड हम सबका एक देश होगा।।

अरे करेंगे हम सब मिल इस चक्ररत्न का स्वागत कल।
सभी सम्भालेंगे मिलकर आई जिम्मेदारी हम पर।।
भरतराज के नम्र निवेदन को सुन सब सन्तुष्ट हुये।
और विविधविध चर्चाओं में सभी लोग संलग्न हुये।।

कोई कहने लगा भरत कितने विनम्र मृदुभाषी हैं।
पुण्योदय से प्राप्त चक्र को वे सबका बतलाते हैं।।
'बना रहे वात्सल्य भाव' – ऐसा व्यवहार निभाते हैं।
'सब रहें साथ में' – वे निशदिन बस यही भावना भाते हैं।।

हम ऋषभदेव की संतानें सब एक, एक से ही तो हैं।
उनकी जो गौरव गाथा है, हम सबकी है, हम सबकी है।
जो–जो सत्कार्य हुये हमसे सब उनके हैं, सब उनके हैं।
यद्यपि हम सब हैं पृथक्–पृथक्, पर उनके हैं पर उनके हैं।।

हम सबका है सो उनका है अर उनका है हम सबका है।
जो उनके साथ गये भाई वे सब इस कुल के दीपक हैं।।
जो रहे शेष घर में भाई वे सब इकदम इस घर के हैं।
हम सब में एका रहे सदा क्योंकि हम सब इक घर के हैं।।

जबतक हम सब इस घर में हैं तबतक इस घर के हैं भाई।
जिनने घर छोड़ा वे सब तो श्री जिनवर पथ के हैं राही।।
जो शेष रहे सब बंधे रहें यह तो सौभाग्य हमारा है।
हम एक, एक ही रहें सदा सारा परिवार हमारा है।।

यह जग का सर्वश्रेष्ठ कुल है यह नाभिराय कुलकर का है।
हम सभी एक श्रेणी के हैं हम सब ही इसकी शोभा हैं।।
इस कुल के गौरव को भी तो हम सभी बढ़ाने वाले हैं।
आगे–पीछे हम सब भी तो मुक्ति में जाने वाले हैं।।

हम सब मिलकर आदीश्वर के गौरव से गुंजित इस कुल को।
खण्डित ना होने देंगे हम मण्डित रक्खेंगे इस कुल को।।
यह तीर्थंकर के गौरव से अर चक्रवर्ती के वैभव से।
अर कामदेव की सुन्दरता से मण्डित अन्तर्वैभव से।।

इस गौरव को इस गरिमा को हमको सम्भालकर रखना है।
जबतक हम घर में रहें अरे गरिमा को कायम रखना है।।
पूज्य पिताश्री ऋषभदेव ने मुझे बनाया था राजा।
कामदेव बाहूबलि को उनने युवराज बनाया था।।

और भाइयों को भी उनने यथायोग्य पद बाँटे थे।
और सभी को प्रेमभाव से रहने की शिक्षा दी थी।।
अब उनकी आज्ञा धारण कर हम प्रेमभाव से रहें सभी।
आपस में सब सुलझा लेवें मतभेद होय जब कभी–कभी।।

---

1. गोद 2. अदिनाथ 3. भरतक्षेत्र

प्रश्नोत्तरमाला 22

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

प्रश्न : देह को पड़ौसी बनकर कैसे देखा जा सकता है और क्यों?

उत्तर : जिसप्रकार हम पड़ौसी को अपना भी नहीं मानते हैं और उससे असद्व्यवहार भी नहीं करते; उसीप्रकार इस देह में एकत्व बुद्धि भी नहीं रखना और इससे असद्व्यवहार भी नहीं करना चाहिए। यदि पड़ौसी का जीवन खतरे में हो तो हम उसकी सुरक्षा करते हैं, उसे जीवनयापन में सहयोग करते हैं; पर उसके लिए अपना जीवन बर्बाद नहीं करते; उसके लिए भोग सामग्री नहीं जुटाते। इसीप्रकार देह की सुरक्षा के लिए शुद्ध सात्विक आहार का ग्रहण अवश्य करना, पर इसके लिए अभक्ष्य आदि का भक्षण नहीं करना चाहिए। इसे शत्रु भी नहीं मानना और घरवाला भी नहीं मानना चाहिए अर्थात् इस शरीर के साथ शत्रु जैसा व्यवहार भी नहीं करना चाहिए और घरवालों जैसा व्यवहार भी नहीं करना चाहिए; बस पड़ोसी जैसा ही व्यवहार करना चाहिए। अत: इसके लिए जीवन का सर्वस्व समर्पण करना उचित नहीं है, सर्वस्व समर्पण तो निज भगवान आत्मा पर ही करना चाहिए।

प्रश्न : 25वीं गाथा की टीका में भाव मरण किसे कहा गया है?

उत्तर : मोह भाव की उत्पत्ति को भाव मरण कहा गया है।

प्रश्न : मोह के नाश का उपाय क्या है?

उत्तर : पर से भिन्न, राग से भिन्न, पर्याय से पार, सर्व पर्यायों में एकाकार, गुण-भेद से भिन्न, प्रदेश-भेद से भिन्न, अनन्त-गुणात्मक, असंख्य-प्रदेशी एक भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित करना, उसी का विचार करना, मंथन करना, घोलन करना ध्यान करना ही मोह के नाश का उपाय है।

प्रश्न : 'देह ही आत्मा है' - अपनी इस मान्यता की पुष्टि में अज्ञानी जीव क्या कुतर्क प्रस्तुत करता है?

उत्तर : 'देह ही आत्मा है' - अपनी इस मान्यता की पुष्टि में अज्ञानी कहता है कि जैन शास्त्रों में देह के गुणों के आधार पर भी तीर्थंकरों एवं आचार्यों की स्तुति की गई है। ऐसी स्थिति में यदि देह को जीव नहीं मानोगे तो वह स्तुति मिथ्या सिद्ध हो जाएगी। अत: हमें देह को ही आत्मा स्वीकार करना चाहिए। इसप्रकार नयविभाग से अपरिचित/अप्रतिबुद्ध शिष्य ने अभी तक उपलब्ध स्तुति साहित्य को आधार बनाकर देह में एकत्व बुद्धि का पोषण किया।

श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान सम्पन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ के तत्त्वावधान में श्री नेमिनाथ मन्दिर में दिनांक 27 से 31 अक्टूबर 2022 तक पंच-दिवसीय श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान का मंगल आयोजन किया गया।

मुख्य विद्वान डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ के दोनों समय प्रवचनसार ग्रन्थ पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधानाचार्य के रूप में पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं पण्डित सन्देश शास्त्री दिल्ली रहे।

ध्वजारोहणकर्ता श्रीमती छाया-अशोककुमारजी, श्रीमती सोनल-पीयूषकुमारजी सिंघई परिवार एवं विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती ऋतु-चक्रेशजी, श्रीमती रचना-राजेशजी जैन परिवार रहे।

सम्पूर्ण आयोजन में ट्रस्ट मण्डल, जैन युवा शास्त्री परिषद, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, नव जिज्ञासा मण्डल एवं राजुल गर्ल्स ग्रुप खनियांधाना का सहयोग प्राप्त हुआ।

फैडरेशन द्वारा चूलगिरी में विधान सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की जयपुर महानगर शाखा द्वारा 30 अक्टूबर 2022 की प्रात: जयपुर में स्थित पारसनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी में लघु पंच परमेष्ठी विधान सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड द्वारा पांच प्रकार के मिथ्यात्व का स्वरूप स्पष्ट किया गया। विधान पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़ के निर्देशन में पण्डित रिमांशुजी शास्त्री ने कराया। तत्पश्चात् श्री हीराचन्दजी बैद ने श्री राजमलजी बैगस्या द्वारा अतिशय क्षेत्र चूलगिरि पर लिखित भजन गाया। आयोजन फैडरेशन के अध्यक्ष पण्डित संजयजी शास्त्री सेठी, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री के सहयोग से हुआ।

वैराग्य सन्देश

खड़ैरी निवासी **श्रीमती मथुराबाई धर्मपत्नी सेठ तुलसीदासजी जैन** का पंच परमेष्ठी के स्मरण पूर्वक 31 अक्टूबर 2022 को देह-परिवर्तन हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी की माताश्री थीं। आपका पूरा जीवन तो तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण था ही आपने अपने बच्चों को भी धार्मिक संस्कार दिए।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो – यही भावना है।

सिद्धायतन में अधिवेशन के दौरान परिषद् का गठन

तीर्थधाम सिद्धायतन : यहाँ दिनांक 15 अक्टूबर 2022 को श्री समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के तत्त्वावधान में संचालित विद्यालय के बीस वर्षीय सफल संचालन के उपलक्ष्य में एक अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सिद्धायतन सिद्धार्थी परिषद् का गठन किया गया, जिसमें सर्व सहमति से पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री को अध्यक्ष, श्री संजयजी जैन इन्दौर को महामंत्री एवं पण्डित नीलेशजी शास्त्री को मंत्री नियुक्त किया गया।

अधिवेशन के अध्यक्ष महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर एवं मुख्य अतिथि पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर रहे। विशिष्ट अतिथि श्री विनोदजी देवडिया, श्री प्रद्युम्नजी फौजदार, श्री प्रकाशचन्दजी जैन, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री, डॉ. ममताजी जैन, श्रीमती कुसुमजी गंगवाल, पण्डित आलोकजी जैन, श्री बाबूलालजी जैन थे। स्नातकों ने अपने उद्बोधन में विद्यालय की प्रशंसा करते हुए जीवन में प्राप्त उपलब्धियों का श्रेय विद्यालय को दिया एवं गुरुदक्षिणा स्वरूप अध्ययनरत 50 विद्यार्थियों के आर्थिक सहयोग की जिम्मेदारी ली।

हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित नयनजी शास्त्री ने NTA द्वारा आयोजित UGC-NET परीक्षा में दूसरी बार संस्कृत विषय में कोड-73 से प्रथम प्रयास में ही JRF प्राप्त की।

ज्ञातव्य है कि पूर्व में भी आपने संस्कृत विषय से कोड-25 से प्रथम प्रयास में ही JRF प्राप्त की थी। आप वर्तमान में महाविद्यालय में संस्कृत अध्यापक के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। जैनपथ प्रदर्शक परिवार आपके उज्जबल भविष्य की भावना भाता है।

पंचकल्याणक स्थल की भूमिशुद्धि सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के निर्देशन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का पंचकल्याणक महोत्सव 20 से 26 जनवरी 2023 तक सम्पन्न होने जा रहा है।

पंचकल्याणक का भव्य प्रांगण जिस स्थल पर निर्मित किया जाएगा, उस स्थल की भूमिशुद्धि का कार्यक्रम 2 नवम्बर 2022 को सम्पन्न हुआ। भूमिशुद्धि का मंगल अनुष्ठान पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती सोनलजी जैन, श्री अनुभवजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री की उपस्थिति में हुआ।

महाराष्ट्र में ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में अलौकिक सौंदर्य युक्त ढाईद्वीप जिनायतन की रचना सदृश ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन किया जा रहा है।

महाराष्ट्र में भ्रमण करते हुए ढाईद्वीप रथ ने गजपंथा, देवलाली, पुणे, कोल्हापुर, हेरले, बेलगाम, सांगली, सोलापुर, नातेपुते, पंढरपुर, सेलू, वाशिम, कारंजा, अकोला, डासाला, वरुण, चिखली, हिंगोली, औरंगाबाद, मलकापुर, नागपुर, रिसोड, काटोल आदि नगरों में भ्रमण कर साधार्मियों को सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक के साक्षी बनने के लिए आमंत्रित किया।

सभी स्थानों पर रथ का स्वागत किया गया एवं पूजन-प्रवचनादि कार्यक्रम पूर्वक रथ में शास्त्र विराजमान कर नगर में शोभायात्रा निकाली गयी।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैनद्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2022

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रति,